A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

# हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति में लोकवाद्य एवं लोक धुनों की उपयोगिता

**Dr. Rohit Kumar Mokta**
Assistant Professor (Vocal Music), Lal Bahadur Shastri Government College, Saraswati Nagar, Shimla (Himachal Pradesh)

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 01 June, 2026

Mokta, R.K. (2026). Himachal Pradesh Ki Lok Sanskriti Mein Lok Vadya Evam Lok Dhunon Ki Upyogita. Swar Sindhu, 14(1), 244-246.

## सार

*हिमाचल प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ समृद्ध लोक संस्कृति के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ का लोक संगीत प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है। लोकवाद्य और लोक धुनें केवल संगीत के साधन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक जीवन, धार्मिक आस्थाओं, लोक परंपराओं तथा सामुदायिक चेतना की अभिव्यक्ति भी हैं। हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित लोक धुनें लोगों के सुख-दुःख, प्रेम, भक्ति और सामाजिक संबंधों का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करती हैं। शोध-पत्र में हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति में लोकवाद्यों एवं लोकधुनों की उपयोगिता, सांस्कृतिक महत्व तथा संरक्षण की आवश्यकता का अध्ययन किया गया है।*

***मुख्य शब्द:*** *लोक संस्कृति, लोकवाद्य, लोक धुनें, हिमाचल प्रदेश, सांस्कृतिक विरासत, लोक संगीत*

## प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि कहा जाता है। यहाँ की संस्कृति में प्रकृति, आस्था और लोक जीवन का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। पर्वतीय जीवन की सरलता, धार्मिक मान्यताएँ और सामुदायिक परंपराएँ यहाँ के लोक संगीत में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। जब किसी देव यात्रा में रणसिंघा और कर्णाल की ध्वनि गूँजती है, जब किसी गाँव में विवाह के अवसर पर ढोल और शहनाई बजती है, तब केवल संगीत नहीं सुनाई देता, बल्कि हिमाचल की सांस्कृतिक आत्मा बोलती हुई प्रतीत होती है। लोकवाद्य और लोक धुनें सदियों से यहाँ के जनजीवन का अभिन्न हिस्सा रही हैं। वे केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता और लोक स्मृतियों के संरक्षण का सशक्त साधन भी हैं। आज वैश्वीकरण और आधुनिक संगीत के बढ़ते प्रभाव के बीच पारंपरिक लोक संगीत नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में लोकवाद्यों और लोक धुनों की उपयोगिता तथा संरक्षण की आवश्यकता को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

### अध्ययन के उद्देश्य

1. हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोकवाद्यों का अध्ययन करना।
2. लोक धुनों की सांस्कृतिक भूमिका का विश्लेषण करना।
3. लोकवाद्यों एवं लोक धुनों की सामाजिक उपयोगिता को समझना।
4. वर्तमान चुनौतियों एवं संरक्षण के उपायों का अध्ययन करना।
5. लोक संगीत के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण की संभावनाओं का मूल्यांकन करना।

## हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोकवाद्य

हिमाचल प्रदेश की सांगीतिक परंपरा अनेक पारंपरिक वाद्यों से समृद्ध है। इनमें से प्रत्येक वाद्य का अपना विशिष्ट महत्व है।

### ढोल

ढोल हिमाचल का सबसे लोकप्रिय ताल वाद्य माना जाता है। विवाह, मेले, देव यात्राएँ तथा लोकनृत्य इसके बिना अधूरे माने जाते हैं। इसकी लय लोगों में उत्साह और सामूहिक ऊर्जा का संचार करती है।

### नगाड़ा

नगाड़ा मुख्यतः धार्मिक आयोजनों और देव परंपराओं से जुड़ा हुआ है। इसकी गंभीर ध्वनि श्रद्धा और सम्मान का वातावरण निर्मित करती है।

### करनाल

धातु से निर्मित यह वाद्य विशेष धार्मिक अवसरों पर बजाया जाता है। देव संस्कृति में इसका विशेष महत्व है।

**रणसिंघा**
रणसिंघा हिमाचल की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक माना जाता है। इसकी ध्वनि शक्ति, गौरव और परंपरा का प्रतीक मानी जाती है।

**शहनाई**
शहनाई शुभ अवसरों का वाद्य है। विवाह और मांगलिक कार्यक्रमों में इसकी मधुर ध्वनि वातावरण को आनंदमय बना देती है।

**बांसुरी**
बांसुरी प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। हिमाचल के ग्रामीण जीवन में इसका विशेष स्थान है।

## हिमाचल की लोक धुनें : लोक जीवन की आवाज़

लोक धुनें किसी भी समाज की सामूहिक स्मृति होती हैं। हिमाचल प्रदेश की लोक धुनों में यहाँ के लोगों का जीवन, संघर्ष, प्रेम, भक्ति और प्रकृति के प्रति लगाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार की लोक धुनें प्रचलित हैं—

- - नाटी धुनें
- - झूरी गीतों की धुनें
- - लामण धुनें
- - देवगाथा धुनें
- - विवाह गीतों की धुनें
- - कृषि एवं ऋतु आधारित धुनें

इन धुनों की विशेषता यह है कि वे लोक जीवन के अनुभवों से जन्म लेती हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ती हैं।

## लोक संस्कृति में लोकवाद्यों की उपयोगिता

**सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण**
लोकवाद्य प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखने का कार्य करते हैं। इनके माध्यम से परंपराएँ और सांस्कृतिक मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं।

**धार्मिक परंपराओं का आधार**
देव संस्कृति में लोकवाद्यों का विशेष महत्व है। अधिकांश धार्मिक आयोजनों में इनकी उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती है।

**सामाजिक एकता का माध्यम**
लोकवाद्यों की ध्वनि लोगों को एक मंच पर लाती है। वे सामुदायिक सहभागिता और सामाजिक एकता को मजबूत बनाते हैं।

**मनोरंजन एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति**
ग्रामीण जीवन में लोकवाद्य मनोरंजन का प्रमुख साधन रहे हैं। लोकगीतों और लोकनृत्यों की आत्मा इन्हीं वाद्यों में बसती है।

**पर्यटन को प्रोत्साहन**
लोक संगीत और लोकवाद्य हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करते हैं, जिससे सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

## लोक धुनों की उपयोगिता

**लोक जीवन का दर्पण**
लोक धुनें लोगों की भावनाओं, अनुभवों और जीवन संघर्षों का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करती हैं।

**सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण**
इन धुनों के माध्यम से सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण होता है।

**भावनात्मक अभिव्यक्ति**
प्रेम, विरह, भक्ति, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति लोक धुनों के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली रूप में होती है।

**शिक्षा एवं जागरूकता**

लोक धुनें लोक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक संदेशों को जनसामान्य तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम रही हैं।

**मानसिक एवं आध्यात्मिक संतुलन**

लोक संगीत व्यक्ति को मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन प्रदान करता है। यह सामूहिक आनंद और सामाजिक जुड़ाव की भावना को भी मजबूत करता है।

## वर्तमान चुनौतियाँ

आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण पारंपरिक लोक संगीत कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। मुख्य चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं—

- - लोक कलाकारों की घटती संख्या
- - पारंपरिक प्रशिक्षण की कमी
- - आधुनिक संगीत का बढ़ता प्रभाव
- - आर्थिक सहयोग का अभाव
- - लोक धुनों और वाद्यों का अपर्याप्त दस्तावेजीकरण

यदि समय रहते इन चुनौतियों पर ध्यान नहीं दिया गया तो कई पारंपरिक धुनें और वाद्य विलुप्त होने का खतरा झेल सकते हैं।

## संरक्षण एवं संवर्धन के उपाय

लोक संगीत को संरक्षित करने के लिए निम्नलिखित प्रयास आवश्यक हैं—

- - विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर लोक संगीत शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाए।
- - लोक कलाकारों को आर्थिक सहायता और सम्मान प्रदान किया जाए।
- - लोक धुनों एवं लोकवाद्यों का डिजिटल अभिलेखीकरण किया जाए।
- - सांस्कृतिक मेलों और उत्सवों में लोक संगीत को प्राथमिकता दी जाए।
- - युवाओं को प्रशिक्षण और शोध के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- - विश्वविद्यालयों में लोक संगीत अध्ययन के लिए विशेष शोध परियोजनाएँ प्रारंभ की जाएँ।

## निष्कर्ष

हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति में लोकवाद्य एवं लोक धुनें केवल संगीत के साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत के जीवंत प्रतीक हैं। वे सामाजिक जीवन, धार्मिक परंपराओं और सामुदायिक एकता को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान समय में इनके संरक्षण की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। यदि लोकवाद्य मौन हो गए और लोक धुनें विस्मृत हो गईं, तो केवल संगीत ही नहीं, बल्कि हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक स्मृतियों का एक महत्वपूर्ण अध्याय भी समाप्त हो जाएगा। इसलिए यह हम सभी का दायित्व है कि इस अमूल्य धरोहर को सुरक्षित रखें और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएँ।

## संदर्भ सूची

1. शर्मा जगदीश- हिमाचल प्रदेश का लोक संगीत, हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी शिमला- 2000.
2. घुणा श्याम सिंहः- हिमाचल की लोक संस्कृति, अतुल्य पब्लिकेशन-2023.
3. मोक्टा डा. रोहितः- हिमालय के आंचल में बसता शिमला का लोक संगीत लूलू पब्लिकेशन- 2026.
4. शर्मा व्यथित डा. गौतमः- हिमाचल प्रदेश लोक संस्कृति और साहित्य, नैशनल बुक ट्रस्ट- 1980.
5. जस्टा हरिरामः- हिमाचल की लोक संस्कृति, सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली-1986.
6. दुबे श्यामचरणः- मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन दिल्ली- 1969